फरीदाबाद

मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी. फरीदाबाद — 121001

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 280 1/- अक्टूबर 2011

मारुति सुजुकी मानेसर सिर के बल अनुशासन

✶29 अगस्त से मानेसर फैक्ट्री गेट के बाहर बैठा मजदूर : "शिफ्टों और नौकरी के रुटीन से परे जीवन के बारे में पहली बार सोचा है, फुर्सत में ढँग से सोचा है।" ✶मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखा गया युवा मजदूर : "बम्पर शॉप में सुपरवाइजर सीधे गाली देते हैं। स्थाई मजदूर भी हमारी इज्जत नहीं करते। अधिकतर काम हम से करवाया जाता है। बम्पर असेम्बली में तो बहुत-ही ज्यादा काम है और यहाँ स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 5 स्टेशन हैं, एक शिफ्ट में ठेकेदार के जरिये रखे 15-16 मजदूर काम करते हैं। मैं चाहता हूँ कि दुनियाँ में सब जीयें, सब खुशी से जीयें।" ✶मारुति सुजुकी से सन् 2000 में नौकरी से निकाला गया मुखर मजदूर : "यह हारने वाले लड़के नहीं हैं। मानेसर फैक्ट्री के इन लड़कों में संघर्ष का जज्बा और ऊर्जा, दोनों हैं।"

मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में स्थाई और अस्थाई मजदूरों के बीच तालमेल जून के बाद तेजी से बढे हैं। जून में चाणचक्क फैक्ट्री पर कब्जा शानदार शुरुआत थी। 27-28 जुलाई को स्थाई और अस्थाई मजदूरों के तालमेल ने कम्पनी तथा सरकार को पीछे हटने को मजबूर किया — 27 को अस्थाई मजदूर के संग खड़े हुये स्थाई मजदूरों को गिरफ्तार करने पहुँची पुलिस को 28 जुलाई को खाली हाथ लौटना पड़ा था। जकड़ को ढीला करती और हँसी-खुशी की वाहक बनती युवा ऊर्जा..........

✶कम्पनी-पक्ष में सजी-धजी चलती-फिरती लाशों का समवेत स्वर: "अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं करेंगे !" ✶धुँध को छाँटते, जीवन के, उल्लास के वाहक युवा मजदूरों में उभरता नाद: "तानाशाही सहन नहीं करेंगे !"

मारुति सुजुकी मानेसर के युवा मजदूरों के सुर और ताल मेल खा रहे हैं विश्व-भर में हिलोरें ले रही युवा ऊर्जा से। ट्युनिशिया, मिश्र, यमन के युवाओं ने दशकों से जमे राष्ट्रपतियों को दफा किया। यूनान, स्पेन, फ्रान्स, इंग्लैण्ड में अनुशासनहीन युवा मजदूरी-प्रथा को घेरे में ले रहे हैं। अफगानिस्तान-पाकिस्तान-छत्तीसगढ-झारखण्ड-उड़ीसा में किसान-दस्तकार-ग्रामीण गरीब मरने-मारने पर उतरे हैं। रुपये-पैसे के एक प्रमुख केन्द्र, अमरीका में न्यू यार्क शहर में वॉल स्ट्रीट का गला घोंटने को हजारों की सँख्या में लोग रोज एकत्र हो रहे हैं।

इसलिये मारुति सुजुकी मानेसर में 29 अगस्त को सरकार और कम्पनी द्वारा मजदूरों पर सीधा हमला। बन्द कमरों में गुप्त योजनायें, लुका-छिपा कर तैयारियाँ...... सेना अधिकारी हों चाहे कम्पनी अधिकारी और इनके विशेषज्ञ सलाहकार, यह सब दो और दो चार के चक्रव्यूह में फँसे हैं। कागज पर हर समय दो और दो चार होना साहबों की हेकड़ी बढाता है पर समाज में, व्यवहार में दो और दो कभी पच्चीस हो जाते हैं तो कभी शून्य, और फिर कभी माइनस ग्यारह हो जाते हैं। हर सरकार की सेना के अभ्यास, सरकारों की सेनाओं के संयुक्त अभ्यास कागज पर दो और दो चार में बिल्कुल फिट और.....और व्यवहार में नाटो गठबन्धन सेनाओं के विश्व-भर में जगह-जगह हमले समाधान की बजाय संकट बढा रहे हैं। साहबों में किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा। मारुति सुजुकी और सरकार के योजना बना कर, तैयारी करके मजदूरों पर किये हमले का हश्र....!

कनात की जगह दीवार

600 एकड़ में फैली फैक्ट्री को बहुत नीची दीवार और जाली से प्रदर्शित कर अपनी शक्ति दिखाती मारुति सुजुकी कम्पनी ने जाली के पीछे कनातें लगा कर अपने को छिपाया। कमजोरी उजागर होने से भयभीत कम्पनी अक्टूबर-आरम्भ से फैक्ट्री को ऊँची दीवार से घेरने में जुटी है....

दो सौ वर्ष पहले बनी भाप-कोयला आधारित शुरुआती फैक्ट्रियों को किलों का रूप देना पड़ा था क्योंकि रात के समय सैंकड़ों की सँख्या में दस्तकार (लुहार, बढई, बुनकर) इन दैत्यों पर हमले करते थे। इधर कुछ समय से फिर फैक्ट्रियों को किलों में बदलने की प्रक्रिया जारी है..... साहबों का यह दिवालियापन ही है क्योंकि मजदूर तो बाहर ही नहीं बल्कि फैक्ट्रियों के अन्दर भी रहते हैं। किलों के अन्दर और बाहर शत्रु ही शत्रु! और, सुरक्षा के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे जाते गार्ड जो रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन ड्युटी करते हैं।

जापान में बच्चों द्वारा आत्महत्या करना। जर्मनी में लोगों द्वारा सरकार को परमाणु बिजलीघर बन्द करने को मजबूर करना। चीन में ज्ञान-विज्ञान से लैस पार्टी और सरकार मजदूरों से, किसानों से, उमड़-घुमड़ रही युवा ऊर्जा से भयभीत हैं। बांगलादेश में मजदूर जब उमड़ते हैं तब दर्जनों फैक्ट्रियों को आग लगा देते हैं।

कागज के टुकड़े

सरकार, मारुति सुजुकी कम्पनी और बिचौलियों ने बहुत पापड़ बेले थे जून में समझौते के लिये। लेकिन मजदूरों ने उसे कागज के टुकड़े के तौर पर लिया..... अपने ही नियम-कानूनों को बड़े पैमाने पर तोड़ते साहब लोग विलाप करते रहे नियम-कानून की हत्या पर। इधर 30 सितम्बर को भारी माथा-पच्ची के बाद साहबों ने फिर समझौता किया और..... और 7 अक्टूबर को फैक्ट्री पर कब्जा कर मजदूरों ने फिर कागज के टुकड़े को कागज का टुकड़ा कह दिया। शब्द और वचन की पवित्रता भंग करना जिनकी दिनचर्या है, वे नेता-अफसर "समझौते की पवित्रता" की दुहाई दे रहे हैं।

आह्, युवा ऊर्जा

यह संकट-दर-संकट को मैनेज करने का दौर है। विशेषज्ञों के समाधानों का सार है: आम लोगों को और अधिक निचोड़ो। फिर, एक्सपर्ट समझ नहीं पा रहे कि क्यों उनके संकट समाधान नये संकटों, बढते सकटों को जन्म दे रहे हैं।

ऐसे में मारुति सुजुकी मानेरार के स्थाई मजदूरों और ट्रेनी ने अस्थाई मजदूरों को कम्पनी द्वारा बाहर रखने के खिलाफ 7 अक्टूबर को फैक्ट्री पर कब्जा किया। इस बार युवा ऊर्जा मारुति सुजुकी तक सीमित नहीं रही, आई.एम.टी. में 7 अक्टूबर को 11 फैक्ट्रियों पर मजदूरों ने कब्जे किये।

यह स्थाई मजदूर, अस्थाई मजदूर, बेरोजगारों और ग्रामीण तथा शहरी गरीबों में तालमेल का समय है। मेरी-तेरी की जगह हमारी का समय है यह। फैक्ट्रियों पर कब्जा करने और फैक्ट्रियों को दफनाने का समय है यह। रुपये-पैसे और होड़ वाले आज, मण्डी-मुद्रा और प्रतियोगिता वाले वर्तमान के स्थान पर तालमेलों वाले, मिल कर रहने, साँझा करने और मानव योनि प्रकृति का एक अंश है की वास्तविकता को स्वीकार कर नई समाज रचना का समय है यह।■

दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में मजदूर

● *दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक 6084 रुपये (8 घण्टे के 234 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 6734 रुपये (8 घण्टे के 259 रुपये); कुशल श्रमिक 7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये)।* पच्चीस-पचास पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054 ● **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन: *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4644 रुपये (8 घण्टे के 179 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5294 रुपये (8 घण्टे के 204 रुपये)।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ़ ।

एडिगियर इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 253 सैक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 9½ बजे काम आरम्भ होता है और 100 महिला मजदूर रात 8 बजे छूटती हैं तथा 800 पुरुष मजदूर रात 1 बजे, अगली सुबह 4, 6 बजे तक काम करते हैं। रविवार को साँय 6 बजे, रात 1 तक काम। महिला मजदूरों का महीने में 100 घण्टे और पुरुष मजदूरों का 180-240 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा देरी से, अगस्त की 20 सितम्बर को देनी शुरू की और थोड़ी-थोड़ी कर दे रहे थे। 22 को सुबह 11 बजे तनखा बँटते समय टोका-टोकी हो रही थी कि डायरेक्टर के छह फुटे परसनल सेक्युरिटी अफसर ने एक मजदूर के थप्पड़ मारा। क्यों मारा? छह फुटा निकल गया.... भोजन अवकाश में मजदूर फैक्ट्री से निकले और थप्पड़ मारने वाले से पूछने लगे तो वह दूसरे परसनल सेक्युरिटी अफसर की सहायता से छुड़ा कर भाग गया। तभी जनरल मैनेजर फैक्ट्री के बाहर मिल गया और उसे परसनल सेक्युरिटी अफसर बना दिया गया। साहब ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती। फोन पर शिकायत। कम्पनी की जिला पुलिस से सैटिंग है, तत्काल कार्रवाई हुई। पुलिस आई और, जिन 42 मजदूरों के नाम दिये थे उन्हें गिरफ्तार कर मानेसर थाने ले गये। काम बन्द कर मजदूर फैक्ट्री से बाहर आ गये। थाने से 21 को छोड़ दिया और 21 को बन्द रखा। फैक्ट्री में 23-24-25 को उत्पादन बन्द। मजदूर कह रहे हैं कि रिहा करो, केस वापस लो, खाली दिनों का मुआवजा दो..... अगर शिपमेन्ट भेजनी है तो यह करो। **एडिडास, रिबोक, प्यूमा, आई पी एल किट** का चमडे का सामान..... अरजेन्ट आर्डर हैं, कम्पनी को सोम-मंगल (26-27 सितम्बर) तक समझौता करना पड़ेगा। मैनेजर के पिटते समय ए पी सेक्युरिटी गार्डो ने अपनी ड्युटी की, एक तरफ खिसके।"

फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स श्रमिक : "प्लॉट 8 व 9 सैक्टर-27 बी, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में नया सेक्युरिटी अफसर सुबह घड़ी 15 मिनट आगे कर देता है ताकी 8 की बजाय पौने आठ काम शुरू हो। समय पर पहुँचा मजदूर घड़ी दिखाता है तो साहब कहता है कि तुम्हारी घड़ी से नहीं, कम्पनी की घड़ी से काम होता है। गेट पर खड़ा कर देते हैं, जनरल मैनेजर डाँटता है। रात को कम्पनी की घड़ी 15 मिनट पीछे कर देते हैं, रात 8½ की बजाय पौने नौ छोड़ते हैं। विभाग की घड़ी में रात 8½ बजने पर 15 सितम्बर को बाहर निकल रहे थे तब गेट पर गार्ड को घड़ी पीछे करते देखा। सेक्युरिटी अफसर वहीं खड़ा था। मजदूर काफी भड़के। साहब बोला कि कल जनरल मैनेजर से कहना। जी एम ने 16 सितम्बर को सुबह 8 बजे सब मजदूरों को आफिस के सामने बुलाया। उपस्थिति भत्ते के 500 रुपये की योजना के बारे में बोला। लाभ उठाओ पर पाँच मिनट देर से पहुँचने पर हाफ डे कर देंगे और यह 500 रुपये भी जायेंगे। ड्युटी कम्पनी की घड़ी अनुसार होगी....मजदूरों के बीच से आवाज आई कि कम्पनी की घड़ी आगे-पीछे कर दी जाती है। साहब ने धमकी दी। दस बजे सेक्युरिटी अफसर, प्रोडक्शन इन्चार्ज, प्रोडक्शन मैनेजर और जनरल मैनेजर दनदनाते प्लॉट 8 में टूल रूम पहुँचे। रात को घड़ी के बारे में पहले एक स्थाई मजदूर को खींचा और फिर एक कैजुअल वरकर से मारपीट करते हुये तेज बारिश में उसे गेट पर ले गये और निकाल दिया। प्लॉट 8 व 9 के मजदूरों को यह सब दिखा कर धमकाया : इससे बुरा हो सकता है। कैजुअल वरकर ने गाली देने और हाथ उठाने से जनरल मैनेजर को रोका तब साहब थरथर काँप रहा था।"

एन. एस. इन्टरप्राइज कामगार : "एफ-23 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **ओरियन्ट क्राफ्ट, वीयरवेल, साहनी, ए.वी. क्रियेशन** का कम्प्युटर इम्ब्राइड्री का काम होता है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे काम पर 30 दिन के हैल्परों को 4000 और ऑपरेटरों को 6000-6500 रुपये देते हैं। अगस्त की तनखा आज 20 सितम्बर तक नहीं दी है। गाली देते हैं। पीने का पानी ठीक नहीं। शौचालय गन्दा।"

ऋचा ग्लोबल वरकर : "232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में साप्ताहिक अवकाश के दिन, रविवार को ड्युटी नहीं करो तो नौकरी से निकाल देते हैं। आठ घण्टे काम करने के बाद अपनी मर्जी से जा नहीं सकते। इन्चार्ज बहुत गाली देते हैं, फिनिशिंग विभाग में 500 महिला मजदूरों को तो बहुत ज्यादा गाली देते हैं। ड्युटी सुबह 9½ से है, 8½ बजे बुलाते हैं। छोड़ते रात 9 बजे हैं। पाँच मंजिल हैं, दो हजार से ज्यादा मजदूर हैं। हर मंजिल पर दो नलके जिनमें एक खराब रहता है, पानी पीने के लिये लम्बी लाइन लगती है। एक फ्लोर पर 4 शौचालय, 1-2 हर समय खराब रहते हैं।"

जु-शिन मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 2500 महिला और 500 पुरुष मजदूर **होण्डा, हीरो, सुजुकी** दुपहियों के ताले बनाते हैं। महिला मजदूरों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है, दो घण्टे ओवर टाइम के कहते हैं और इनके 75 रुपये देते हैं। पुरुष मजदूरों की सुबह 9 से रात 10 की ड्युटी है और उसके बाद अगली सुबह 6 बजे तक जबरन रोक लेते हैं, तीन घण्टे बाद, 9 बजे से फिर काम में जुत जाओ। पुरुष मजदूरों को ओवर टाइम के मात्र 17 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं और महीने में 100 घण्टे के ही पैसे देते हैं जबकि 150-200 घण्टे ओवर टाइम जबरन करवाते हैं। अगस्त की तनखा आज 15 सितम्बर तक आधे मजदूरों को ही दी है। फैक्ट्री में तीसरी मंजिल खड़ी कर दी है जबकि पहली मंजिल गिरने को है – लोहे के एंगल लगा कर रोका है। स्टोर और लैब एक हाथ दब गये हैं, मजदूर कभी भी दब सकते हैं।"

शशि सर्विस श्रमिक : "प्लॉट 5 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 25 वर्ष से काम कर रहे 4 स्थाई मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन्हें ही सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन तथा महँगाई भत्ता देते हैं। कम्पनी द्वारा भर्ती 4 महिला मजदूरों की तनखा 2300-2500 और 16 पुरुष मजदूरों की 2500-4500 रुपये। ठेकेदार के जरिये रखें 20 मजदूरों की तनखा 3000-3700 रुपये। ठेकेदार तनखा बढाता है और खाने के सामान का प्रबन्ध करता है अन्यथा मजदूर काम नहीं करेंगे, पर यह सब वह डायरेक्टर से छिपा कर करता है क्योंकि साहब डाँटता है: 'मेरे मजदूर बिगड़ जायेंगे।' सुबह 8½ से रात 8 तक सब की ड्युटी है और फिर कुछ लोग रात 2 बजे तक काम करते हैं। रविवार को साँय 5 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फास्फेटिंग, पाउडर कोटिंग, गीले पेन्ट का भी काम है पर मास्क नहीं देते, कपड़ा बाँधते हैं। काम का ज्यादा दबाव है, डायरेक्टर सिर पर खड़ा रहता है। चोट लगने पर मजदूर अपने पैसों से इलाज करायें। बहुत-ही जरूरी होने पर पैसे माँगते हैं तो साहब कहता है: 'मैं ए टी एम हूँ क्या?' श्रम निरीक्षक हर महीने आता है, मजदूरों से कभी नहीं मिलता। यहाँ **ओरियन्ट पँखों** का काम होता है।"

अरावली प्रिन्टर्स कामगार : "डब्लू-30 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर अगस्त की तनखा आज 19 सितम्बर तक नहीं दी है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं।" **इनकास इन्टरनेशनल वरकर:** "142 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में चमड़े के जैकेट बनाते 400 मजदूरों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी रोज और फिर रात 2 बजे तक रोकते हैं। ढाई सौ मजदूर रोल पर नहीं हैं, इनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हेल्परों की तनखा 3000-3500 रुपये और कारीगर पीस रेट पर। पीने का पानी बहुत खराब है। .....

अंग्रेजी में इन्टरनेट पर libcom पर बहुत रोचक The Coming Insurrection है जिसे The Invisible Committee ने पिरोया है।

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी.....(पेज चार का शेष)

श्रमिकों की सेवायें समाप्त कर दी गई थी, उन सभी 15 श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेश प्रबंधन द्वारा 1.10.2011 को वापस लिये जायेंगे तथा इन सभी श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेशों में तब्दीली, करके उनके निलम्बन के आदेश जारी किये जायेंगे। परन्तु उनके विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष जाँच की जायेगी तथा जाँच के आधार पर आगामी कार्यवाही की जायेगी। जाँच के आधार पर जो भी निर्णय होगा, वह उन्हें मान्य होगा।

2. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से दिनांक 30.8.2011 के बीच जिन 18 तकनिशयन प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण समाप्त किया गया था, उन सभी 18 प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण समाप्ति के आदेश दिनांक 1.10.2011 को वापस लेते हुये ये सभी प्रशिक्षणार्थी उसी ट्रेनी के पद पर कार्य करते रहेंगे।

3. दिनांक 1.7.2011 से दिनांक 17.9.2011 के बीच जिन 29 श्रमिकों को निलम्बित कर दिया गया था, वे सभी 29 श्रमिक निलम्बित रहेंगे, इन सभी 29 श्रमिकों को चार्जशीट किया जायेगा तथा उनके विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष जाँच की जायेगी। जाँच के आधार पर जो भी निर्णय होगा, वह उन्हें मान्य होगा।

4. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से किसी भी श्रमिक के कार्य वापसी तक "कार्य नहीं तो वेतन नहीं" के सिद्धान्त के अनुसार इन दिनों का कोई वेतन देय नहीं होगा इसके अतिरिक्त जुर्माने के तौर पर मात्र एक दिन के वेतन की कटौती की जायेगी।

5. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि सभी श्रमिक कल दिनांक 1.10.2011 को अवकाश लेंगे और दिनांक 3.10.2011 से अपनी-अपनी शिफ्ट अनुसार प्रबंधकों द्वारा वांछित उत्तम आचरण बंध पत्र पर हस्ताक्षर करके कार्य पर जायेंगे। दिनांक 1.10.2011 के अवकाश को निकट भविष्य में किसी अवकाश के दिन कार्य करके समायोजित करेंगे।

6. दोनों पक्षों में यह भी तय पाया कि सभी श्रमिक अनुशासन में रहते हुये सामान्य उत्पादन करते हुये किसी भी प्रकार की सामुहिक या व्यक्तिगत रूप से अनुशासनहीनता की कार्यवाही नहीं करेंगे और कार्य में बाधा नहीं डालेंगे और प्रबन्धक भी श्रमिकों के विरुद्ध द्वेष की भावना से कार्यवाही नहीं करेंगे।

7. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि भविष्य में कोई विवाद उत्पन्न होता है तो उसका निपटारा आपसी बातचीत से हल करेंगे।

8. दोनों पक्ष एक दूसरे के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं करेंगे तथा इस सहमति के उपरान्त एक दूसरे के प्रति द्वेष भावना न रखते हुये पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे।

9. इस समझौते के उपरान्त दोनों पक्षों के बीच कोई विवाद शेष नहीं रहेगा तथा सभी विवाद समाप्त समझे जायेंगे।

●3 अक्टूबर को स्थाई मजदूर और ट्रेनी फैक्ट्री के अन्दर गये। ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया। रोष। आश्वासन। 4 और 5 अक्टूबर को भी इन मजदूरों को ड्युटी पर नही लिया। गुस्सा बढा। कम्पनी-पक्ष के लोगों ने इन मजदूरों को चिढाया, उकसाया। कम्पनी का ठेकेदारों को स्पष्ट आदेश कि 1200 में से एक भी मजदूर को काम पर नहीं रखना है। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के बीच बढते तालमेल को कम्पनी ने अपनी धार पर धरा। आक्रोश और असहायता में 100 के करीब मजदूर हिसाब ले गये परन्तु बाकी मजदूरों ने स्थाई मजदूरों पर दबाव डाला। जो 44 निलम्बित स्थाई मजदूर हैं उन पर तो ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर दबाव बढाते गये और आश्वासन से आगे बढने को कहा।

●दशहरे के बाद, 7 अक्टूबर को सुबह 10 बजे फैक्ट्री गेट पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर। धमकाने पहुँचे पहलवान उर्फ बाउन्सर। एक निलम्बित स्थाई मजदूर जो कि कमेटी सदस्य है उसने बाउन्सर को टोका तो वह उस पर ही पिल पड़ा था कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने हस्तक्षेप किया और बाउन्सर दुम दबा कर खिसका। आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्रियों के आश्वासन देने वाले मजदूरों से सम्पर्क। मारुति सुजुकी गेट के बाहर एकत्र हुये और 1 बजे फैसला कर लिया कि 4 बजे, जब ए तथा बी शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्रियों में इकट्ठे होते हैं तब काम बन्द कर जम जाना है, फैक्ट्रियों पर कब्जा कर लेना है।

●7 अक्टूबर को साँय 4 बजे मारुति सुजुकी मानेसर के ए तथा बी शिफ्ट के स्थाई मजदूरों तथा ट्रेनी यह कह कर फैक्ट्री में जम गये कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लो। सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल, सत्यम ऑटो, बजाज मोटर, इन्ड्युरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स, लुमैक्स डी के, डिघानिया आदि के मजदूरों ने साँय 4 बजे फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द कर दिया फैक्ट्रियों के अन्दर प्रदर्शन करने लगे, फैक्ट्रियों पर कब्जा कर लिया और माँग की कि मारुति सुजुकी मानेसर में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लिया जाये। सरकार ने 200 से ज्यादा पुलिसवाले मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर भेजे। पुलिस फिर फैक्ट्री के अन्दर टिकी है।

●8 अक्टूबर को मारुति सुजुकी, सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों के मजदूर फैक्ट्रियों पर कब्जा जारी रखे हैं। कम्पनियों ने कैन्टीनें बन्द कर दी हैं इसलिये मजदूरों ने भोजन बनाने का प्रबन्ध किया है। दबाव के कारण सत्यम ऑटो, इन्ड्युरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स, लुमैक्स डी के, डिघानिया, बजाज मोटर फैक्ट्रियों के मजदूरों से काम शुरू करवा दिया है। गुड़गाँव फैक्ट्री को छोड कर सुजुकी समूह की चार फैक्ट्रियों पर मजदूरों के कब्जे को पर्याप्त माना जा रहा है— ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों और 44 निलम्बित स्थाई मजदूरों को काम पर रखवाने के लिये। इस सन्दर्भ में याद आया है 30 सितम्बर का पोस्टर जिसे 1 अक्टूबर को दोपहर चिपकाने पहुँचे तो फैक्ट्री गेट के बाहर सुनसान था। पोस्टर जो नहीं चिपका –

मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों द्वारा ताकत बढाने के बारे में

★कम्पनी और सरकार ने योजना बना कर, तैयारी करके 29 अगस्त से मजदूरों पर हमला बोला है।

★मजदूरों के तालमेल एक महीने से इस आक्रमण का सफलता से मुकाबला कर रहे हैं। अनेक प्रकार की सहानुभूति और सहायता ने मजदूरों को मजबूती प्रदान की है।

★स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच तालमेल मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट और सरकार को रोके हुये हैं। हमलावरों को पीछे धकेलना है।

★मजदूर अपनी ताकत कैसे बढायें ? यह प्रश्न अरजेन्ट बना हुआ है।

★मारुति सुजुकी मानेसर के मजदूरों के साथ आई.एम.टी. मजदूरों का जुड़ना पहला और सहज व सरल कदम लगता है।

★सहानुभूति और सहायता से आगे बढने, अधिक निकट आने के लिये साँझे सवालों को उभारना जरूरी लगता है।

★तनखायें बहुत कम और स्थाई काम के लिये टैम्परेरी मजदूर रखना जैसी बातें साँझी जमीन प्रदान करती लगती हैं। महँगाई को देखते हुये आई.एम.टी. में आठ घण्टे काम के कम से कम आठ सौ रुपये और ठेकेदारी प्रथा पर रोक के लिये प्रयास मारुति सुजुकी मजदूरों को आई.एम.टी. की हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ जोड़ सकते हैं।

★समय है। युवा ऊर्जा है। सैक्टर– 8, 7, 6, 5, 4, 3 की फैक्ट्रियों में 8 घण्टे के 800 और ठेकेदारी पर रोक जैसी बातें मारुति सुजुकी मजदूर पाँच- दस की टोलियाँ बना कर बहुत तेजी से अन्य मजदूरों के बीच ले जा सकते हैं।

★मारुति सुजुकी मानेसर का मामला आई.एम.टी. का मामला बनना–बनाना हमलावरों को पीछे धकेल देने वाला लगता है।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नही लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने मे एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (2)

●29 अगस्त से गेट के बाहर बैठे मजदूरों से चर्चाओं के लिये 31 अगस्त को तैयार पॉइन्ट : *1. घड़ी की सुई को, काल के पहिये को हम पीछे नहीं घुमा सकते। इसलिये आज और आने वाले कल पर ध्यान केन्द्रित करना बनता है। 2. तैयारी कर 29 अगस्त को सुबह सवेरे मारुति सुजुकी, कम्पनी और सरकार ने हमला किया। मुकाबला तो करना ही है इसलिये ऐसे कदम हमारी धुरी बनते हैं जिनसे हमारी शक्ति बढती जाये। 3. यह संयोग है कि मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के स्थाई मजदूरों ने शर्तों पर हस्ताक्षर नहीं करने का निर्णय लिया है। ऐसे में मामला मारुति सुजुकी तक केन्द्रित रहा तो एक और दुखद परिणाम हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। जब-तब वाली समर्थन सभायें व जुलुस तथा इस- उस दिन कुछ फैक्ट्रियों में काम बन्द करना विगत में परिणाम में परिवर्तन नहीं लाया है। 4. कम्पनी और सरकार के आक्रमण के खिलाफ जुड़ने-जोड़ने-तालमेल बढाने के लिये आई.एम.टी. क्षेत्र प्रारम्भिक स्थल बनता है। 5. मारुति सुजुकी फैक्ट्री मजदूरों तक ही बात सीमित रही तो हमदर्दी से अधिक की आशा करना नादानी ही होगी। इसलिये आई.एम.टी. क्षेत्र में मजदूरों के सम्मुख समस्याओं- परेशानियों को महत्वपूर्ण बनाना बनता है। 6. काम का बहुत अधिक बोझ, कदम-कदम पर अपमान, तनखायें बहुत कम, पता नहीं कब निकाल दें का डर, मजबूरी में अथवा जबरन 12-16 घण्टे की ड्युटी वाली वास्तविकता के कारण मजदूर गुस्से तथा असहायता से भरे पड़े हैं। इसलिये पहले कदम के तौर पर जुड़ने-जोड़ने-तालमेल बढाने के लिये ठेकेदारी-प्रथा पर रोक और एक घण्टे काम के कम से कम 100 रुपये मुद्दे बन सकते हैं। 7. इस समय दस-बीस-पचास की टोलियों में मारुति सुजुकी मजदूर आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों के पास आसानी से जा सकते हैं, चर्चायें कर सकते हैं। इस प्रकार मारुति सुजुकी के ढाई हजार मजदूरों का दस-बीस-पचास हजार-एक लाख मजदूर बनना कम्पनी और सरकार के हमले की काट करने में कारगर लगता है। 8. आई.एम.टी. में बात बढने के संग-संग पूरे गुड़गाँव के मजदूरों के साथ तालमेल वाले कदम भी आसानी से उठाये जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में दिल्ली क्षेत्र (गुड़गाँव, दिल्ली, फरीदाबाद, नोएडा, गाजियाबाद, बहादुरगढ, सोनीपत) के आधार पर मजदूरों के कदम व्यवहारिक बनने में अधिक समय नहीं लगना चाहिये। 9. मजदूर संघर्ष समिति बनाने के प्रयास बहुत शीघ्र कार्यसूची पर आ सकते हैं। 10. छात्रों के साथ तालमेल की सम्भावनायें आज बहुत सहजता से हो सकती लगती हैं। 11. मजदूरी-प्रथा पर सवाल उठाने के हालात बनने में देर नहीं लगेगी..... विश्व-व्यापी मन्थन और तालमेलों में उल्लेखनीय योगदान की सम्भावना है।*

●मारुति सुजुकी मजदूरों की हलचल का असर आई.एम.टी. में मुंजाल शोवा मजदूरों में 12 सितम्बर को दिखाई दिया। स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखने के खिलाफ साँय 3 बजे सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। बगल की सत्यम ऑटो के मजदूर तुरन्त मुंजाल शोवा में आने-जाने लगे। मुंजाल शोवा कम्पनी की गुड़गाँव और हरिद्वार फैक्ट्रियों में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। मंगलवार, 13 सितम्बर को रात 8 बजे कम्पनी ने 155 को तत्काल स्थाई कर और आश्वासन दे कर उखड़ी साँस सम्भाली।

●14 सितम्बर को साँय 4 बजे सुजुकी पावरट्रेन कास्टिंग फैक्ट्री, सुजुकी पावरट्रेन ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन फैक्ट्री और सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्री की दो शिफ्टों के मजदूर काम बन्द कर फैक्ट्रियों के अन्दर प्रदर्शन करने लगे, नारे लगाने लगे। उत्पादन ठप्प और फैक्ट्रियों के अन्दर जमे मजदूर कह रहे थे : मारुति सुजुकी मानेसर के सब मजदूरों को ड्युटी पर लो और गुड कन्डक्ट बाण्ड हटाओ।

●सुजुकी कास्टिंग, इन्जन, मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में 15 सितम्बर को भी उत्पादन बन्द और उत्साह से भरे मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर। मारुति सुजुकी गेट पर हँसी-मजाक करते युवा मजदूर। समर्थन में नारे लगाते आते, भाषण देते, गीत गाते, पर्चा बाँटते संगठन। खूब बातें, रोचक चर्चायें। सेल एण्ड डिस्पैच के ड्राइवरों ने सी-शिफ्ट में काम बन्द किया – ठेकेदार के जरिये रखे 350 ड्राइवर 15 सितम्बर को ए और बी शिफ्ट में फैक्ट्री के एस एण्ड डी गेट के बाहर जमे, बरसात में भी खुले में पेड़ों-झाड़ियों तले।

●हू-हू-हू का बढता शोर मानी टी वी वाले, अखबार वाले आये हैं। मीडिया के आने की सूचना मारुति सुजुकी गेट के बाहर बैठे मजदूर हू-हू-हू के जरिये एक-दूसरे के पास पहुँचाते हैं। बचपन का भ्रम दूर हुआ है। जब 11वीं में था तब टाइम्स ऑफ इण्डिया में भरोसा हुआ था.... मारुति सुजुकी चेयरमैन के इस अखबार में छपे पूरे बयान ने अब आँखें खोली हैं।

●16 सितम्बर को सुबह 10 बजे सुजुकी कास्टिंग, इन्जन और मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में काम शुरू करवा दिया गया : कम्पनी चर्चा के लिये तैयार है पर शर्त रखी है कि पहले तीन फैक्ट्रियों में काम आरम्भ करवाओ। लचर दलील। यूनियनों की रैली कैन्सल..... दरअसल, माहौल को देख कर सरकार, कम्पनी और बिचौलिये रस्मी कदमों से भी कई बार डर जाते हैं।

●18 सितम्बर को रात को श्रम विभाग-कम्पनी-मजदूरों के बीच समझौता-वार्ता। गुँजाइश ही नहीं थी। असफल..... पुलिस ने वार्ता-स्थल से ही तीन मजदूर गिरफ्तार कर लिये। साहबों को आशा थी कि प्रतिक्रिया में मजदूर भड़केंगे और तब... तब सरकार व कम्पनी की योजना तेजी से सफलता की तरफ बढेगी।

●इस उकसावे पर भी मारुति सुजुकी मजदूर भड़के नहीं। शान्त रहे। गिरफ्तार साथियों की जमानत के लिये कदम उठाये। 19 की बजाय 20 सितम्बर को छूट कर आये।

●एक करोड़वीं कार बनने पर मजदूरों को दिये फोन को कम्पनी ने अपना औजार बनाने की कसरत की। जेल में 3 मजदूरों के बन्द रहने के समय ट्रेनी को मैनेजरों के फोन पर फोन। अन्दर क्यों नहीं आये? नोटिस लगाया था कि 19 सितम्बर तक काम शुरू करो अन्यथा अपने को बर्खास्त समझो। तुम्हें बर्खास्त कर दिया है पर फिर भी अभी भी आ सकते हो......

●कम्पनी ने हर मजदूर के घर 4-6 पत्र भेजे हैं। फोन पर सन्देश : 20 सितम्बर को "डियर इम्पलाई", 21 को "मारुति परिवार के प्रिय साथी", फिर "प्रिय सहकर्मी", हैल्पलाइन नम्बर, सच्चाई जानने के लिये लिन्क पर वीडियो देखें, विवेकानन्द, नेपोलियन के शब्द। कम्पनी ने मैनेजरों की मजदूरों के गाँव-घर जाने की ड्युटी लगाई। फैक्ट्री गेट पर बैठे मजदूर को परिवार से सूचना मिली तब कहा : "पूछना मत, ठण्डा ला कर साहब को पिलाओ और आदर से विदा करो।"

●कम्पनी : आज 670 गाड़ी बनी हैं। मैनेजर तब बोले : जिस दिन 1000 गाड़ियाँ बन जायेंगी उस दिन तुम सब को निकाल देंगे।

●अलियर, ढाणा, बास, माँगरोला के कुछ पंचों-सरपंचों को कम्पनी ने मजदूरों के खिलाफ एकत्र किया : फैक्ट्री के अन्दर जाओ या फिर यहाँ से भागो। रात को दारू पिला कर गाड़ी में घुमाया। कमरों के किराये बढाये.... रात की धमकी अगले दिन फुस्स और थोड़ी दूर स्थित गाँवों में मारुति सुजुकी मजदूरों का स्वागत।

●योजना अटक गई, मजदूरों ने अटका दी। कम्पनी ने पैंतरा बदला। बिचौलियों को नये सिरे से सक्रिय किया। इधर मजदूरों को भी लगने लगा था कि गेट के बाहर बैठे रहने और सहायता व समर्थन मात्र से बात आगे नहीं बढेगी। ऐसे में 23 सितम्बर को गुड़गाँव फैक्ट्री यूनियन लीडर तीन बसों में मजदूरों को ले कर मानेसर फैक्ट्री पहुँचे। सुजुकी समूह की तीन अन्य फैक्ट्रियों के यूनियन लीडर भी पहुँचे। भाषण और चर्चायें। मानेसर फैक्ट्री के 250 स्थाई मजदूरों ने गुड़गाँव फैक्ट्री यूनियन लीडरों के समझौता-वार्ता में बैठने के लिये हस्ताक्षर किये। **(बाकी पेज तीन पर)**

●मजदूरों को पुनः जकड़ में लेने में सीधा हमला असफल हो जाने पर सरकार, कम्पनी और बिचौलिये नये सिरे से सक्रिय हुये। समझाने-बुझाने के लम्बे दौर चले। झूठे आश्वासन तो दिये ही जाते हैं, आई.एम.टी. स्थित कुछ फैक्ट्रियों के युवा मजदूरों ने सच्चे आश्वासन भी दिये। 30 सितम्बर को देर रात समझौता हुआ –

समझौते की शर्तें

1. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से दिनांक 15.9.2011 के बीच जिन 15

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011